शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

उदारीकरण के दौर में लोहिया का समाजवाद

डॉ० ललिता
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय, बी०बी० नगर, बुलंदशहर
ईमेल : *drlalitararoha@gmail.com*

प्राप्तिः 20.01.2024
स्वीकृतः 24.03.2024

3

डॉ0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन मानवतावाद की पूर्ण अभिव्यक्ति है । उनके सिद्धान्त और कर्म वे आधार हैं जिन पर एक नवीन विश्व– व्यवस्था नवीन संस्कृति और नवीन सभ्यता के कल्याणकारी भवन निर्मित हो सकते हैं और उनमें सम्पूर्ण मानवता जाति, धर्म,वंश, लिंग, संस्कृति, सम्पत्ति आदि की भिन्नता, कटुता से मुक्त हो निवास कर सकती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि लोहिया जी भारत के ही नहीं अपितु विश्व के मौलिक राजनीतिक विचारकों में प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं। इनकी दृष्टि में भारत को सुधारने और उसे प्रगति की राह पर लाने का एकमात्र रास्ता समाजवाद था । उनके समाजवाद संबंधी विचारों का उल्लेख उनकी पुस्तकों भारत में समाजवाद, समाजवाद की राजनीति, समाजवाद की अर्थनीति, समाजवाद के आर्थिक आधार आदि मे मिलता है।

1955 में उनकी अध्यक्षता में समाजवादी पार्टी का गठन हुआ । अपनी सक्रिय राजनीति के सम्पूर्ण काल में वे समाजवाद की विचारधारा को सुदृढ़ आधार प्रदान करने हेतु प्रत्यनशील रहे। देश को दिशा देनेवाला चिंतक डॉ राम मनोहर लोहिया देश के उन गिने– चुने नेताओं में हैं, जिनकी सक्रियता और विचार– दृष्टि का असर आज भी देश के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में है। यूपी में फैजाबाद जिले के अकबरपुर में जन्मे डॉ लोहिया ने अपने कस्बे, बनारस और कोलकाता में शुरुआती पढ़ाई के बाद बर्लिन से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की। उनके पीएचडी शोध ा का विषय था ' भारत में नमक पर कर ', जिसमें उन्होंने गांधीजी के नमक सत्याग्रह की पृष्ठभूमि का वर्णन किया था। जर्मनी में उन्होंने मार्क्स व हेगेल के विचारों के अध्ययन के साथ पश्चिम की लोकतांत्रिक परंपराओं को समझा। 1933 में भारत लौटने तक डॉ लोहिया देश और यूरोप में अपनी राजनीतिक गतिविधियों से एक पहचान बना चुके थे। उन्होंने कांग्रेस के भीतर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के गठन में बड़ी भूमिका निभायी. 1936 में कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद पंडित नेहरू ने पार्टी में एक विदेश विभाग की स्थापना की थी और डॉ लोहिया को इसका सचिव बनाया. कांग्रेस की विदेश नीति को आकार देने में उनका अहम योगदान रहा। स्वतंत्रता– संघर्ष में डॉ लोहिया ने बढ़– चढ़ कर हिस्सा लिया. इन गतिविधियों के कारण अंगरेजों ने उन्हें 25 बार गिरफ्तार किया था. आजादी के बाद उनकी कोशिश थी कि भारतीय अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन ग्रामीणों और गरीबों के हित में हो। 1947 के बाद भी उनके जुझारू तेवर बने रहे और वे नेहरू की नीतियों के सबसे बड़े आलोचक बन कर उभरे. गांधी के दर्शन के अनुगामी रहे डॉ लोहिया ने 1963 में संसद में प्रवेश किया. सदन के पटल पर विभिन्न मुद्दों पर उनके सारगर्भित और विद्वतापूर्ण भाषण भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण संदर्भ– ग्रंथ हैं। व्यस्तताओं के बावजूद उन्होंने कई उल्लेखनीय किताबें लिखीं, जिनमें 'द

कास्ट सिस्टम','फॉरेन पॉलिसी ', 'द इंडियन एग्रीकल्चर', 'गिल्टी माइंड्स ऑफ इंडियाज पार्टिशन', 'मार्क्स, गांधी एंड सोशियलिज्म' आदि शामिल हैं। लोहिया का जीवन, उनके काम और लेखन अपने देश को समझने की कुंजी तो हैं ही, भारत के बेहतर भविष्य का सूत्र भी प्रदान करते हैं।

समाजवाद पर लोहिया का विचार

लोहिया ने ऐसी पाँच प्रकार की असमानताओं को चिह्नित किया जिनसे एक साथ लड़ने की आवश्यकता है। स्त्री और पुरुष के बीच असमानता, व त्वचा के रंग के आधार पर असमानता, व जाति आधारित असमानता, व कुछ देशों द्वारा दूसरे देशों पर औपनिवेशिक शासन, व आर्थिक असमानता । इन पाँच असमानताओं के खिलाफ उनके संघर्ष ने पाँच क्रांतियों का गठन किया । इस सूची में उनके द्वारा दो और क्रांतियों को जोड़ा गया व नागरिक स्वतंत्रता के लिये क्रांति, निजी जीवन पर अन्यायपूर्ण अतिक्रमण के खिलाफ व सत्याग्रह के पक्ष में हथियारों का त्याग कर अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने के लिये क्रांति। ये सात क्रांतियाँ या सप्त क्रांति लोहिया के लिये समाजवाद का आदर्श थीं।

लोहिया के समाजवाद की विषेशताएँ

डॉ. लोहिया अपने समाजवादी चिन्तन में मार्क्स और गांधी दोनों से प्रभावित दिखाई देते हैं। उनके समाजवाद चिंतन की मुख्य विषेशताएँ इस प्रकार हैं–

⇒ डॉ. लोहिया का समाजवादी दर्शन उस व्यक्ति पर आधारित है जो सामाजिक पद– सोपान क्रम में सबसे नीचे आता है। जाति, धर्म, शास्त्र, व्यवस्था ने जिसे चारों ओर से जकड रखा है। डॉ. लोहिया के समाजवाद का उद्देश्य वर्गहीन समाज की स्थापना करना है जिसमें शासन व्यवस्था विकेन्द्रीकृत हो।

⇒ राममनोहर लोहिया समाजवाद के माध्यम से ने केवल वर्गों की समाप्ति चाहते थे बल्कि उनकी समाजवादी धारणा में जाति उन्मूलन भी एक आवश्यक तत्व था क्योंकि उनके अनुसार जहां जाति प्रथा के कारण शूद्रों को ठोकर मारने की स्थिति हो, वहां समाजवाद की कल्पना नहीं की जा सकती है।

⇒ अपनी विचारधारा में डॉ. लोहिया ने वर्ग की अवधारणा को स्थान देते हुए वर्ग उत्पत्ति का कारण मात्र आर्थिक ही नहीं माना बल्कि सामाजिक भी माना है। लोहिया इस संदर्भ में मार्क्स से प्रभावित होते हुए भी उनसे भिन्न हैं क्योंकि मार्क्स वर्ग उत्पत्ति का आधार मात्रा आर्थिक तत्व को ही मानते हैं ।वर्ग की धारणा का भारत के संदर्भ में विश्लषेण करते हुए डॉ. लोहिया मानते हैं कि भारत में वर्ग मुख्य रूप से तीन विशेषाधिकारों के कारण उत्पन्न हुए हैं :

1. जाति, 2. सम्पत्ति, 3. भाषा।

⇒ डॉ. लोहिया ने समाजवादी समाज की स्थापना के लिए हिंसात्मक क्रांति का विरोध किया, उनके अनुसार हिंसात्मक क्रांति अनुचित होने के साथ– साथ असंभव है। लोहिया ने मार्क्स के क्रांति संबंधी विचारों का सविनय अवज्ञा के साथ समन्वय किया है। उन्होंने हिंसात्मक क्रांति के स्थान पर सविनय अवज्ञा का पक्ष लिया। उनके अनुसार सविनय अवज्ञा के रूप

में अहिंसात्मक क्रांति जनता में शक्ति का संचार करेगी तथा इसके द्वारा जनता का नैतिक उत्थान भी होगा।

एक ओर जहां सत्ता की विमुखता और उदारीकरण के दौर की मौजूदा विसंगतियों को दूर करने लिए शुचिता, न्याय और समता के व्याख्याकार डॉ राम मनोहर लोहिया के विचारों की आज बहुत जरूरत है, डॉ राम मनोहर लोहिया के आलोचक कहते हैं कि आज जो कुछ हो रहा है, वही तो लोहिया चाहते थे. यानी लोहिया का समय आ गया है और आप उसे हर तरफ जातिवाद, सांप्रदायिकता और पूंजीवादी शोषण के प्रचार के रूप में देख सकते हैं! दूसरी तरफ, लोहिया के माननेवालों के लिए यह समय उन आदर्शो के ठीक विपरीत है, जिसे लेकर लोहिया जी रहे थे और जिसके आधार पर वे नया भारत और नया विश्व बनाना चाहते थे. लोहिया के आलोचकों में पूंजीवादी चिंतक तो हैं ही, जो कभी लालू प्रसाद तो कभी मुलायम सिंह और नीतीश कुमार का नाम लेकर उनकी खिल्ली उड़ाते हैं, लेकिन उससे कहीं कम उन साम्यवादी साथियों की संख्या नहीं है, जो भारतीय समाज की जातिगत संरचना की लोहिया की व्याख्या से असहमति जताते हुए यह सोचते थे कि वे वर्गीय सिद्धांतों के आधार पर इस समाज की व्याख्या करके वर्ग संघर्ष के माध्यम से सर्वहारा की तानाशाही कायम करके देश और दुनिया की सारी दिक्कतें दूर कर देंगे. डॉ लोहिया का भारत विषयक सांस्कृतिक चिंतन अपनी जगह है, लेकिन उनके विचारों का असली जोर आर्थिक और सामाजिक सिद्धांतों पर है. आर्थिक सिद्धांतों में वे न सिर्फ पूंजीवाद के राष्ट्रीय शोषक चरित्र को पकड़ते हैं, बल्कि इस बात को विशेष तौर पर रेखांकित करते हैं कि साम्राज्यवाद उसकी जड़ में निहित है. यूरोपीय पूंजीवाद का सारा विकास एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिकी देशों के शोषण पर खड़ा है. यही व्याख्या वे अपने मशहूर लेख ' इकोनॉमिक्स आफ्टर मार्क्स ' में प्रस्तुत करते हैं. लोहिया की सारी चिंता मानव विकास की यात्र में बढ़ती असमानता है. वे मानते थे कि उसी असमानता से गुलामी और दमन का रास्ता साफ होता है और बाद में उसी से युद्ध की स्थितियां बनती हैं. लेकिन, उनकी खासियत यह थी कि विकास की इन स्थितियों की व्याख्या वे पूंजीवाद और साम्यवाद के प्रभावों से मुक्त होकर करना चाहते थे. इन्हीं अर्थो में वे कहते भी थे कि साम्यवाद तीसरी दुनिया पर यूरोप का आखिरी हमला है।

लोहिया की उन बातों को आज थॉमस पिकेटी की चर्चित पुस्तक ' कैपिटल इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी ' के माध्यम से देखेंगे, तो वे ज्यादा प्रासंगिक होंगी. थॉमस पिकेटी कहते हैं कि पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच 1917 से 1989 तक चले द्वंद्व बहुत सारी सच्चाइयां ढक गये थे, क्योंकि उन्हें पक्षपाती ढंग से देखा जाता था. अब जबकि दुनिया एक ही खेमे में सिमट गयी है, तो बहुत कुछ साफ होता जा रहा है. पिकेटी कहते हैं कि उदारीकरण के दौरान दुनिया में असमानता तेजी से बढ़ी है. भारत में इसका रिकॉर्ड अमर्त्य सेन और ज्यां द्रेज अपनी किताब ' द अनसर्टेन ग्लोरी ' में पेश करते हैं. पिकेटी ने धन के इतिहास का विस्तृत तौर पर विवेचन करके बताया है कि धन का भंडार जितनी तेजी से बढ़ता है, उतनी तेजी से काम करनेवालों की आय नहीं बढ़ती. इसलिए दुनिया में आज जो आर्थिक ढांचा चल रहा है, उसमें असमानता बढ़नी ही है. हालांकि, वे इस दावे को खारिज करते हैं कि दुनिया चीन की मुट्ठी में आनेवाली है और तमाम अमीर देश चीन के बुरी तरह कर्जदार हैं, लेकिन वे अमीर देशों के भीतर निजी पूंजी के विस्तार को बड़ा खतरा बताते हैं. पिकेटी कहते हैं कि निजी

धन बहुत तेजी से बढ़ा है, विशेषकर अमीर देशों में इतनी तेजी से, जितनी तेजी से हमने सोचा था. इसी आधार पर वे चीन के खतरे को खारिज करते हैं. इसके बावजूद यह खतरा कोई छोटा नहीं है कि बड़ी मात्र में बेहिसाब वित्तीय परिसंपत्तियां कर मुक्त देशों में जमा हैं. इसकी मात्र वैश्विक जीडीपी के दस प्रतिशत से ज्यादा बतायी जाती है. पिकेटी यह भी कहते हैं कि इक्कीसवीं सदी के वैश्वीकृत पूंजीवाद में परिसंपत्तियों का पता लगाना बेहद मुश्किल हो गया है. इस तरह परिसंपत्तियों का बुनियादी भूगोल पता कर पाना कठिन हो गया है. ऐसे में गरीबों के लिए यह जानना जरूरी हो गया है कि परिसंपत्तियों का इतिहास और उनका भूगोल क्या है.

उदारीकरण के इस दौर में दुनिया के तमाम देशों पर करोड़पतियों और अरबपतियों के कब्जे का खतरा पैदा हो गया है. लोहिया की सारी चिंता इसी खतरे को लेकर थी. लोहिया साठ के जिस दशक में बेहद सक्रिय होकर जिये, वहां उनके सपने थे कि अगर देश में समाजवादी सरकार बनी तो देश का जो 27 करोड़ आदमी रोजाना तीन आने पर गुजर करता है, उसकी आमदनी हम आठ आने पर ले आयेंगे। आज अगर वे होते तो उसकी आमदनी को दो डॉलर यानी सवा सौ से डेढ़ सौ रुपये करने की बात करते. परिसंपत्ति और आय की वृद्धि के फर्क को मिटाने के लिए डॉ लोहिया कहते थे कि कारखाने के नौकर और अफसर के वेतन में ज्यादा से ज्यादा दो या तीन गुने का फर्क होना चाहिए। अपने वक्त में ही उन्हें इस फर्क के दो हजार से तीन हजार गुना होने का अनुमान था और इसे वे बेहद अन्यायपूर्ण मानते थे। आज वह फर्क हजार नहीं, बल्कि लाखों गुने का है और जाहिर है वह अन्याय किस स्तर का है। वे अपनी समाजवादी हुकूमत के एजेंडे का वर्णन इस प्रकार करते हैं– ' यह याद रखना कि जो सरकार बनेगी, वह मजदूरों की, किसानों की, मध्यम वर्ग की या कलम घिसियों की सरकार होगी. उसमें नियंत्रण खाली यह रखना है कि जो मजदूर की और अफसर की तनख्वाह का अनुपात हो, वह न्याय वाला हो। इस बात पर ज्यादा ध्यान मत देना कि हमारी तनख्वाह बढ़ाओ, ध्यान इस बात पर देना कि जो बड़े हैं उनकी घटाओ. आज जो कुछ मन में आ जाये करो, लेकिन जब समाजवादी हुकूमत आ जाये, तो उस वक्त मेहरबानी करके ध्यान रखना कि जो बड़े लोग हैं, उनकी सुविधा को हम घटाएं, ताकि इस रुपये को नये कारखाने और खेती वगैरह में लगा कर दौलत को बढ़ाएं और तब मजदूरों की तनख्वाह बढ़ाएं।

इसके अलावा डॉ लोहिया कहते हैं कि महंगाई भत्ता वगैरह बढ़ाने के बजाय, चीजों के दाम स्थिर करने की कोशिश करनी चाहिए. अगर चीजों के दाम स्थिर करने की कोशिश हो, तो वह सारे राष्ट्र की चीज हो जायेगी। आज की वैश्विक आर्थिक स्थितियों को अगर हम देखें, तो दुनिया की लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था के पीछे बढ़ती महंगाई, गरीबों–मजदूरों की तनख्वाह में कटौती और अमीरों की आय में बढ़ोतरी बड़ा कारण है। हर तरफ इस विसंगति को दूर करने की बेचैनी है, लेकिन निजी धन इतना बढ़ गया है और बड़े पूंजीपतियों का राजनीतिक रसूख इतना बड़ा हो गया है कि इसे दूर किया नहीं जा रहा है.।

लोहिया को इस दौर में समझने की एक और भूल की जा रही है उन्हें जातिवादी बना कर वे वैसे नहीं थे। पिछले बीस वर्षो के उदारीकरण के दौर को एक तरफ पिछड़ों और दलितों का स्वर्ण युग बताया जा रहा है, तो दूसरी तरफ समाज में इन ताकतों के विखंडन की प्रक्रिया भी देखी जा रही है। वे ताकतें महज अस्मिता या परिवारवाद की राजनीति में उलझ गयी हैं, उनसे कोई

व्यवस्थागत बदलाव प्रकट होता नहीं दिख रहा है. और तो और, वे ताकतें भ्रष्टाचार में भी उसी तरह से लिप्त हो गयी हैं, जिस तरह सवर्ण जातियां थीं।

शुचिता, न्याय और समता के व्याख्याकार एवं योद्धा डॉ राम मनोहर लोहिया की जरूरत आज इसलिए ज्यादा है कि वे उदारीकरण के दौर में उपजी विसंगतियों को दूर करें. लोहिया के सपने में एक समाजवादी राष्ट्रीय सरकार ही नहीं, बड़े मूल्यों पर आधारित एक वैश्विक सरकार भी थी। यह दौर लोहिया और उनके जैसे चिंतकों को सबसे ज्यादा याद करने और उनसे प्रेरणा लेने का है, तभी हमारा भविष्य संवरेगा और हम उदारीकरण की अनुदारता से मुक्त होंगे।

निष्कर्ष

आज देश में गैर–बराबरी भ्रटाचार भुखमरी गरीबी अशिक्षा बेरोजगारी कुपोशण जातिवाद क्षेत्रवाद और आतंकवाद जैसी समस्या, गहरी है। यह सही है कि देश तरक्की का आसमान छू रहा है। लेकिन नैतिक और राष्ट्रीय मूल्यों में व्यापक गिरावट के कारण अमीरी–गरीबी की खाई लगातार चौडी होती जा रही है। जनवादी होने का मुखौटा चढाकर सरकारें बुनियादी कसौटी पर विफल हैं। और सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों से निपटने में नाकाम हैं। नागरिक समाज के प्रति रवैया संवेदहीन है। ऐसी परिस्थिति में हमें लोहिया जी की विचारधारा पर चलने की आवश्कता है।

लोहिया जी ने बेहतरीन समाज निर्माण के लिये सत्तातंत्र को चरित्रवान होना जरुरी बताया था। उनका निष्कर्ष था कि सत्यनिष्ठा और न्यायप्रियता पर आधारित शासनतंत्र ही लोक व्यवस्था के लिये श्रेयस्कर साबित हो सकता है। लोहिया भारतीय भाषाओं को समृद्ध होने देना चाहते थे। उन्हें विश्वास था कि भारतीय भाषाओं के समृद्ध होने से देश में एकता मजबूत होगी। लोहिया ने नाइंसाफी और गैर–बराबरी खत्म करने के लिये देश के समक्ष सप्तक्रांति का दर्शन प्रस्तुत किया। नर–नारी समानता, रंगभेद पर आधारित विषमता की समाप्ति जन्म तथा जाति पर आधारित असमानता का अंत विदेशी जुल्म का खात्मा तथा विश्व सरकार का निर्माण, निजी संपत्ति से जुडी आर्थिक असमानता का नाश तथा संभव बराबरी की प्राप्ति, हथियारों के इस्तेमाल पर रोक और सिविल नाफरमानी के सिद्धात की प्रतिस्थापना तथा निजी स्वतंत्रताओं पर होने वाले अतिक्रमण का मुकाबला इस सप्तक्रांति में लोहिया के वैचारिक और दार्शनिक तत्वों का पुट है जो हर दौर में प्रासंगिक है। भारत में समाजवादी विचारधारा को आधार प्रदान करने में डॉ0 राममनोहर लोहिया का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। लोहिया नेएशियाई समाजवाद का मार्ग प्रशस्त किया है।

सन्दर्भ

1. लोहिया, राम मनोहर. व्हील ऑफ़ हिस्ट्री।
2. लोहिया, राम मनोहर. माक्र्स ए गांधी एण्ड सोशलिज्म।
3. वर्मा, डॉ० वी०पी०. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन।
4. (2001). आधुनिक समाजवाद के शिल्पी. समाजवादी अध्ययन मुख्तार अनीश एवं शोध संस्थानः लखनऊ. पृष्ठ **144–145.**
5. (2001). भारतीय समाजवाद के शिल्पी, समाजवादी अध्ययन मुख्तार अनीश एवं शोध संस्थानः लखनऊ. पृष्ठ **144–145.**

6. यादव, डॉ0 डी0एस0. (2012). प्रमुख राजनीतिक विचारक. डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउसः नई–दिल्ली. पृष्ठ **222–223.**
7. मेहता, जीवन. (2015). भारतीय राजनीतिक चिंतन. एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउसः आगरा. पृष्ठ **197.**
8. https://samatavadi.wordpress.com/category/intellectual-imperialism.
9. www.dalitdastak.com/.../dr.-lohia-ke-samajwad-ko-yadav-pariwar-...
10. limtykhare.blogspot.in/2012/09/blog-post_21.html.
11 www.prabhatkhabar.com/news/special-news/story/365164.html.
12. 164.100.47.194/LOKSabha/Members/DebateResults16.aspx?mpno=9291.
13. http://pramathesh.blogspot.in/search/label/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%A4%E0%A4%BF?updated-max=2013-06-14T07:11:00%2B05:30&max-results=20&start=36&by-date=false
14. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-news-analysis/dr-ram-manohar-lohia.
15. https://rajkamalprakashan.com/dr-rammanohar-lohia-ka-samajwadi-darshan.html.